छुटकारे का इतिहास – भाग 2

अध्याय 11: भ्रष्टता और छुटकारा

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास बाइबल है, और आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ न्यायियों 2 पर आएँ। उद्धार के लिए परमेश्वर की स्तुति हो। आज हम अपने शेष समय में इसे एक अलग रीति से करेंगे। हम कुछ समय इस पद में बितायेंगे। और मैं चाहता कि आप कुछ सत्यों को देखें। और फिर मैं चाहता हूँ कि आप कुछ समय इस पद पर मनन करें, और यह पद आपके मन में बैठ जाए। और फिर वह हमें वहाँ लेकर जाएगा जहाँ पिछले सप्ताह हमने आरम्भ किया था, यह सोचते हुए कि इस वर्ष परमेश्वर जब हमें भारत की ओर ले जा रहा है तो वह हम में और हमारे द्वारा क्या कर रहा है।

जब हम न्यायियों की पुस्तक में आते हैं तो जो तस्वीर मैं चाहता हूँ कि आप देखें, पहले 18 पद अच्छे हैं। सब कुछ अच्छा हो रहा है, परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के कहने के अनुसार प्रतिज्ञा के देश पर अधिकार कर लिया है। परन्तु परमेश्वर ने उनसे कहा था, "जब तू प्रतिज्ञा के देश में जाए तो वहाँ की मूरतों, झूठे देवताओं और लोगों की अनैतिकता को प्रतिज्ञा के देश से निकाल देना। तू उन सब को बाहर निकाल देना।"

जब परमेश्वर के लोग वह सब कर चुके जिसकी परमेश्वर ने उन्हें करने की आज्ञा दी थी, परन्तु – पद 19 को सुनें। "यहोवा यहूदा के साथ रहा, इसलिए उसने पहाड़ी देश के निवासियों को निकाल दिया; परन्तु तराई के निवासियों के पास लोहे के रथ थे, इसलिए वह उन्हें न निकाल सका।" और अध्याय 1 के अन्त तक यही प्रारूप रहता है, जहाँ लिखा है, "उन्होंने लोगों को नहीं निकाला, जैसा परमेश्वर ने उन्हें करने की आज्ञा दी थी।"

पद 21 को देखें। "और यरूशलेम में रहनेवाले यबूसियों को बिन्यामीनियों ने न निकाला।" पद 27, "मनश्शे ने बेतशान और उसके गाँवों के निवासियों को न निकाला।" पद 28, "जब इस्राएली सामर्थी हुए, तब उन्होंने कनानियों से बेगारी ली, परन्तु उन्हें पूरी रीति से न निकाला।" पद 29, "एप्रैम ने गेजेर में रहनेवाले कनानियों को न निकाला।" पद 30, "जबूलून ने कित्रोन और नहलोल के निवासियों को न निकाला।" पद 31, "आशेर ने अक्को के निवासियों को न निकाला।" पद 32, "आशेरी लोगों ने देश के निवासी कनानियों को नहीं निकाला था।" और पद 33, "नप्ताली ने बेतशेमेश के निवासियों को न निकाला।"

तस्वीर यह है। परमेश्वर के लोगों ने देश के निवासियों और उनकी अनैतिकता और मूर्तिपूजा को निकालने की परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया। और इस स्तर पर समझौता करने के फलस्वरूप, परमेश्वर के लोग मूर्तिपूजा और अनैतिकता में गिर गए, और न्यायियों की पुस्तक इसी के बारे में है।

मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ न्यायियों 2:10 को देखें, और हम पद 10 से अध्याय के अन्त तक पढ़ेंगे, और यह एक पद्यांश में न्यायियों की सम्पूर्ण पुस्तक का साराँश है। मेरे साथ पद 10 से आरम्भ करें।

और उस पीढ़ी के सब लोग भी अपने अपने पितरों में मिल गए; तब उसके बाद जो दूसरी पीढ़ी हुई उसके लोग न तो यहोवा को जानते थे और न उस काम को जो उसने इस्राएल के लिए किया था।
इसलिए इस्राएली वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और बाल नामक देवताओं की उपासना करने लगे; वे अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा को, जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया था, त्यागकर पराये देवताओं, अर्थात् आसपास के लोगों के देवताओं की उपासना करने लगे, और उन्हें दण्डवत् किया; और यहोवा को रिस दिलाई। वे यहोवा को त्याग कर बाल देवताओं और अशतोरेत देवियों की उपासना करने लगे। इसलिए यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़क उठा, और उसने उनको लुटेरों के हाथ में कर दिया जो उन्हें लूटने लगे; और उसने उनको चारों ओर के शत्रुओं के अधीन कर दिया; और वे फिर अपने शत्रुओं के सामने ठहर न सके। जहाँ कहीं वे बाहर जाते वहाँ यहोवा का हाथ उनकी बुराई में लगा रहता था, जैसे यहोवा ने उनसे कहा था, वरन् यहोवा ने शपथ भी खाई थी; इस प्रकार वे बड़े संकट में पड़ गए।

तौभी यहोवा उनके लिए न्यायी ठहराता था जो उन्हें लूटने वाले के हाथ से छुड़ाते थे। परन्तु वे अपने न्यायियों की भी नहीं मानते थे; वरन् व्यभिचारिन क समान पराए देवताओं के पीछे चलते और उन्हें दण्डवत् करते थे; उनके पूर्वज जो यहोवा की आज्ञाएँ मानते थे, उनकी उस लीक को उन्होंने शीघ्र ही छोड़ दिया, और उनके अनुसार न किया। जब जब यहोवा उनके लिए न्यायी को ठहराता तब तब वह उस न्यायी के संग रहकर उसके जीवन भर उन्हें शत्रुओं के हाथ से छुड़ाता था; क्योंकि यहोवा उनका कराहना जो अन्धेर और उपद्रव करनेवालों के कारण होता था सुनकर दुःखी था। परन्तु जब न्यायी मर जाता, तब वे फिर पराए देवताओं के पीछे चलकर उनकी उपासना करते, और उन्हें दण्डवत् करके अपने पुरखाओं से अधिक बिगड़ जाते थे; और अपने बुरे कामों और हठीली चाल को नहीं छोड़ते थे। इसलिए यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क उठा; और उसने कहा, "इस जाति ने उस वाचा को जो मैं ने उनके पूर्वजों से बाँधी थी तोड़ दिया, और मेरी बात नहीं मानी, इस कारण जिन जातियों को यहोशू मरते समय छोड़ गया है उनमें से मैं अब

किसी को उनके सामने से न निकालूँगा; जिससे उनके द्वारा मैं इस्राएलियों की परीक्षा करूँ, कि जैसे उनके पूर्वज मेरे मार्ग पर चलते थे वैसे ही ये भी चलेंगे कि नहीं।" इसलिए यहोवा ने उन जातियों को एकाएक न निकाला, वरन् रहने दिया, और उसने उन्हें यहोशू के हाथ में भी न सौंपा था।

यह न्यायियों की सम्पूर्ण पुस्तक का साराँश है। यह परमेश्वर के लोगों द्वारा परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करने और उसके परिणामों के बहने की कहानी है। और यह सब – आपने देखा पद 11 और 12 में आरम्भ हुआ, जब उन्होंने अपने पुराखों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया, और पराए देवताओं की उपासना करने लगे। इसी कारण परमेश्वर ने उनको कनानियों और उस देश के निवासियों को वहाँ से निकालने की आज्ञा दी थी, क्योंकि वे लोग बहुईश्वरवादी थे जो बहुत से देवताओं की आराधना करते थे। और जब उन्होंने उस स्तर पर समझौता कर लिया, तो विनाश आया। न्यायियों की पुस्तक में, वही होता है जो तब होता है जब आप एक सच्चे परमेश्वर को छोड़कर दूसरे देवताओं की उपासना करने लगते हैं।

मैं आपको दो सच्चाईयों को दिखाना चाहता हूँ, न्यायियों की पुस्तक में जब परमेश्वर के लोग इस्राएल के एकमात्र परमेश्वर को त्याग देते हैं तो क्या होता है। पहला, वे मनुष्य की भ्रष्टता, मनुष्य के पाप, मनुष्य की दुष्टता का उदाहरण देते हैं। यह पुस्तक इस्राएल के नैतिक जीवन का नीचा बिन्दू है। इस पुस्तक को पढ़ना नैतिक रूप से थका देता है, क्योंकि हर मोड़ पर आप मनुष्य के पाप का प्रदर्शन देखते हैं। उनके पाप का केन्द्र खुलेआम मूर्तिपूजा करना है। यही मुख्य समस्या है। न्यायियों की पुस्तक में इस्राएल के पाप की समस्या जिसे आप इस सप्ताह पढ़ेंगे, इस्राएल के पाप की समस्या मूलतः आराधना की समस्या है। वे मुड़कर इन दूसरे देवताओं की उपासना करने लगते हैं। न्यायियों का लेखक हमें यह दिखाना चाहता है कि उनके इस घृणित अनैतिकता में लिप्त होने का कारण पराए देवताओं की उपासना करना है।

अध्याय 10, पद 6 हमें उन सारे देवताओं की सूची देता है जिनकी इस्राएली आराधना कर रहे हैं। यह उनके पाप का केन्द्र था, खुली मूर्तिपूजा, और उनका पाप का परिणाम थी घोर अनैतिकता। मूर्तिपूजा के परिणामस्वरूप, परमेश्वर के लोगों का नैतिक विवेक नष्ट हो गया, और वे घोर अनैतिकता की गहराईयों में डूबते चले गए। इस सप्ताह आप न्यायियों की पुस्तक को पढ़ें, और आपको पवित्रशास्त्र की कुछ सबसे काली, क्रूर कहानियाँ देखने को मिलेंगी। नैतिकता – न्यायियों के बीच में भी, इसके बारे में हम एक पल में बात करेंगे, परन्तु आप मूर्तिपूजा, विश्वासघात, हत्या, बलात्कार की कहानियों को पढ़ेंगे। यह विशेषतः पुस्तक के अन्त में है। आप अनैतिकता की तस्वीरों को देखेंगे जिनके बारे में सोचना भी कठिन हैं, और उनका कारण मूर्तिपूजा है।

जेम्स मोंटगोमरी बॉयस ने एक बार कहा, "कोई भी समूह कभी परमेश्वर के बारे में अपने विचार से ऊपर नहीं उठता। परमेश्वर के उच्च और अद्भुत चरित्र को समझने में चूकने का परिणाम सर्वदा लोगों के नैतिक मूल्यों में गिरावट और इन्सानियत में भी गिरावट होती है।" इसे लिख लें। लोग उस देवता के समान बनते हैं जिसकी वे उपासना करते हैं। अनैतिकता शून्य में नहीं होती है। अनैतिकता मूर्तिपूजा से बहती है। यही हम देखते हैं। न्यायियों की पुस्तक में वे मनुष्य की भ्रष्टता का उदाहरण दिखाते हैं, और इसके परिणामस्वरूप, उन्हें परमेश्वर के छुटकारे की आवश्यकता थी। उन्हें परमेश्वर के छुटकारे की आवश्यकता थी।

और परमेश्वर ने यह किया। वह न्यायियों को खड़ा करता। अब, जब हम न्यायियों के बारे में सोचते हैं, तो हम कुर्सियों पर बैठे लोगों के बारे में सोचते हैं, परन्तु न्यायियों की पुस्तक में, न्यायियों की तस्वीर एक योद्धा या शासक के रूप में अधिक है। परमेश्वर के लोगों को उनके पापों के लिए परमेश्वर से ताड़ना मिलती, और परमेश्वर अम्मोनियों या कनानियों या फिलिस्तीनियों को भेजकर अपने लोगों को दण्ड देता। और वे मन फिराते। वे परमेश्वर की दोहाई देते, और परमेश्वर न्यायियों, योद्धाओं, शासकों को खड़ा करता, जो उन्हें शत्रुओं से छुड़ाते। और यही मुख्य बात थी, परमेश्वर के लोगों को किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उन्हें परमेश्वर के दण्ड से बचाए।

परमेश्वर अपने लोगों के बीच पाप को गम्भीरता से लेता है। परमेश्वर मूर्तिपूजा से नफरत करता है। वह इससे घृणा करता है, और वह अपने लोगों की कठोरता से ताड़ना करता है। और न्यायियों की सम्पूर्ण पुस्तक में परमेश्वर के लोग उस ताड़ना को अनुभव करते हैं, अध्याय 3 से अध्याय 16 तक 12 अलग–अलग समयों पर, परमेश्वर न्यायियों को न केवल उन्हें परमेश्वर के न्याय से छुड़ाने के लिए खड़ा करता है, बल्कि इसलिए भी कि उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उन्हें दिव्य करूणा को दिखाए। और परमेश्वर ने यही किया, एक न्यायी के द्वारा, और वह भी एक ऐसे न्यायी के द्वारा जो सिद्ध नहीं था, परमेश्वर उनको करूणा दिखाता। परन्तु फिर परमेश्वर द्वारा उन पर करूणा करने और उन्हें छुड़ाने के बाद, आप जानते हैं वे क्या करते थे? वे फिर से पाप करने लगते। बार–बार, बार–बार वे अपने पापों की ओर लौट जाते।

इसलिए जब आप अध्याय 16 पर आते हैं तो आप इस पुस्तक के अध्याय 17 से अध्याय 21 में इनमें से अन्तिम न्यायी को उठते हुए देखते हैं, और ऐसा फिर नहीं होता है। आप देखते हैं कि परमेश्वर के लोग अनैतिकता में डूब जाते हैं, और पुस्तक इन शब्दों के साथ समाप्त होती है, न्यायियों 21:25. "जिसको जो

ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था।" और बाइबल की पुस्तक के लिए एक सर्वाधिक निराशाजनक अन्त है, और इसके पीछे एक उद्देश्य है। यह पुस्तक हमें दिखाती है कि परमेश्वर के लोग अपने पापों में परमेश्वर के न्याय के अधीन हैं और उन्हें परमेश्वर की करूणा की आवश्यकता है, और कोई न्यायी, चाहे वह कितना भी महान हो, वह उन्हें परमेश्वर के न्याय से बचाकर दिव्य करूणा को नहीं दिखा सकता है।

यह आने वाले राजाओं के लिए आधार तैयार करता है, और उन में से भी कोई यह नहीं कर पाएगा। आने वाले भविष्यद्वक्ता, जिनमें से कोई भी यह नहीं कर पाएगा। न्यायियों की पुस्तक हमें इस चाहत, इच्छा, और प्रतीक्षा के साथ छोड़ती है कि परमेश्वर किसी को भेजे जो वास्तव में हमें परमेश्वर के दण्ड से बचाने और हमें परमेश्वर की करूणा को दिखाने में सक्षम हो। और यही न्यायियों की पुस्तक का सार है।

अब, यहाँ पर विविध स्तरों पर कोई परस्पर संबंध नहीं है, परन्तु मैं चाहता हूँ कि आप इस बात के प्रकाश में कि जब हम भारत की ओर जाते हैं तो परमेश्वर हमारे मध्य में क्या कर रहा है, उन सत्यों के बारे में सोचें जिन्हें इस सप्ताह हम न्यायियों की पुस्तक में देखेंगे और जिनके बारे में हमने अभी बात की है। क्योंकि यथार्थ यह है कि न्यायियों की पुस्तक में इस्राएल के ऊपर केवल एक ही परमेश्वर है, और आज भारत के ऊपर भी केवल एक ही परमेश्वर है। और मैं चाहता हूँ आप इसके बारे में सोचें कि भारत के लोग किस प्रकार मनुष्य की भ्रष्टता का उदाहरण दिखा रहे हैं। वे भारत में असंख्य देवताओं की उपासना करते हैं। कुछ लोग भारत को करोड़ों देवताओं का देश कहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि भारत में 33 करोड़ से अधिक देवी–देवताओं की उपासना की जाती है।

यदि आप भारत में जाते हैं, तो हर जगह देवता ही देवता नजर आते हैं। सड़क पर चलते समय आप देखते हैं देवताओं की बिक्री हो रही है। यात्रा के समय आप देखते हैं लोग पेड़ों और मन्दिरों के सामने दण्डवत् करते हैं। आप झुग्गियों में जाते हैं और देखते हैं कि गरीब पुरूष और स्त्रियाँ आकर लकड़ी से बने देवताओं के सामने दण्डवत् करते हैं और सिक्के फेंकते हैं। आप गाड़ी में यात्रा करें तो देखेंगे कि कई देवता शीशे में लटकाए हुए हैं या गाड़ी में सामने रखे हुए हैं। आप एक कमरे वाले छोटे घर में जायें और देखेंगे कि दीवारों पर देवी–देवताओं की तस्वीरें लगी हैं। हर स्थान पर देवता हैं, उपासना की वस्तुएँ हैं। असंख्य देवता, और उतने ही रिवाज। घोर अनैतिकता।

विलियम केरी, आधुनिक मिशन्स के पिता, ने भारत में मिशन कार्य आरम्भ किया। और कुछ माह पूर्व जब हम वहाँ पर थे, हम बंगाल में थे, जहाँ उन्होंने अपनी सेवकाई को आरम्भ किया था और सोचें जब विलियम

केरी पहली बार भारत आए तो हिन्दू धर्म से जुड़ी रीतियों को देखकर वे चकित हुए और उन्होंने क्या लिखा होगा। जैसे सती प्रथा, जिसमें एक हिन्दू व्यक्ति को उसकी मृत्यु पर जलाया जाता है, परन्तु केवल उसका शरीर ही नहीं। उसकी जीवित पत्नी को भी उसके साथ जलाया जाता है। और यह एक प्रथा थी। और केरी ने सैंकड़ों बार देखा, विरोध किया, चिल्लाया लेकिन इस प्रथा को रोक नहीं पाया, जहाँ एक वधु को, बहुत बार किसी बालिका वधु को, उसके पति की पार्थिव देह के साथ बाँधकर जला दिया जाता। उन्होंने हिन्दू देवताओं को चढ़ाई जाने वाली नरबलियों के बारे में लिखा।

अब, यह 19वीं सदी के आरम्भ में था, और उन में से कुछ प्रथाएँ आज वैसी नहीं हैं, परन्तु अनैतिकता एक तरह से अब भी वैसी ही है। भारत आज भ्रूण हत्या के लिए जाना जाता है, गर्भ में शिशु के लिंग का निर्धारण करना, और यदि वह लड़की हो, तो उस बच्चे को जीवित न रहने देना, चाहे गर्भ में या जन्म देने के बाद बच्चे को फेंक देना और शिशु की हत्या कर देना। और इसका कारण है दहेज की रकम, जो लड़की के परिवार द्वारा दूल्हे को दी जाती है। भ्रूण हत्या का एक विज्ञापन कहता है दहेज में 50,000 रूपए देने से अच्छा है अभी 500 रूपए खर्च करना। कुछ स्रोतों का अनुमान है कि इस प्रथा के कारण भारत की जनसंख्या में साढ़े तीन से चार करोड़ लड़कियों और स्त्रियों की कमी हो गई है।

दूसरे रिवाज भी बहुत हैं। अन्तर्राष्ट्रीय न्याय मिशन की रिपोर्ट कहती है, "संसार में किसी भी देश से अधिक भारत में बच्चों को जबरन वेश्यावृत्ति में धकेला जाता है।" अत्यधिक देह व्यापार। इसके अतिरिक्त, दक्षिणी एशिया, जिसमें मुख्यतः भारत है, आज संसार में सर्वाधिक गुलाम यहीं रहते हैं।

बहनो और भाइयो, अनैतिकता शून्य में नहीं होती है। अनैतिकता मूर्तिपूजा से आती है। भारत के लोग मनुष्य की भ्रष्टता का उदाहरण हैं, और उन्हें परमेश्वर के छुटकारे की आवश्यकता है।

इसके भार को महसूस करें। उत्तरी भारत में 60 करोड़ से अधिक लोग, और उन में से 99.5 प्रतिशत लोग लाखों झूठे देवताओं की उपासना करते हैं। लाखों लोग अपने पाप में परमेश्वर के दण्ड के अधीन हैं। इससे न चूकें। हम कई बार संसार के भोले–भाले पुरूषों और स्त्रियों के बारे में सोचते हैं जो सुसमाचार सुनने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह सत्य नहीं है। वे दोषी हैं – पाप के दोषी, तिरस्कार के दोषी, परमेश्वर का तिरस्कार करने के दोषी। वे अपने ऊपर परमेश्वर के अधिकार के विरूद्ध बलवा कर रहे हैं और वे पाप में परमेश्वर के अनन्त दण्ड के अधीन हैं।

लोग पाप में परमेश्वर के दण्ड के अधीन हैं, और अधिकाँश लोग सुसमाचार में परमेश्वर की करूणा से अनजान हैं। उनमें से अधिकाँश लोगों ने कभी यह नहीं सुना है कि एकमात्र सच्चा परमेश्वर उनसे प्रेम करता है और उन्हें उद्धार देने की इच्छा रखता है। उनमें से अधिकाँश लोगों ने कभी यह नहीं सुना है कि एकमात्र सच्चे परमेश्वर ने उनके पाप का दण्ड स्वयं और अपने पुत्र के ऊपर ले लिया है और उन्हें पाप से मुक्त करने का मार्ग तैयार किया है – परमेश्वर तक पहुँचने के व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण प्रयासों से आजादी का मार्ग तैयार किया है। परमेश्वर आप तक पहुँचा है और उसने आपको छुड़ाया है और आपसे मेल–मिलाप किया है, और उनमें से अधिकाँश लोगों ने कभी इसके बारे में नहीं सुना है। लोग परमेश्वर के दण्ड के अधीन हैं, अधिकाँश लोग परमेश्वर की करूणा से अनजान हैं। यह भारत की तस्वीर है।

यदि हम इस्राएल के ऊपर के इस एकमात्र परमेश्वर और भारत के ऊपर के इस एकमात्र परमेश्वर की तस्वीर को लेकर इन्हीं सत्यों को यदि अपने जीवनों में लागू न करें, तो हम चूक जायेंगे, क्योंकि हमारे ऊपर वही एकमात्र परमेश्वर है। और भाइयो और बहनो, हम मनुष्य की भ्रष्टता का उदाहरण हैं। यह बहुत बुरा प्रतीत होता है जब आप किसी भारतीय घर में जाते हैं या भारतीय सड़कों पर चलते हैं और आप हर जगह उन देवताओं को देखते हैं और कहते हैं, "इस मूर्तिपूजा को देखो।" परन्तु प्रक्रिया में, आप को अहसास होता है कि अक्सर अपनी स्वयं की मूर्तिपूजा को नहीं देख पाते हैं।

बहनो और भाइयो, हम क्यों सोचते हैं कि हमारी भौतिकता कुछ अलग है? हम क्यों सोचते हैं कि धन और सफलता और प्रसिद्धि और पहचान और वासना और खेल और सांसारिक अभिलाषा और सांसारिक मनोरंजन के देवताओं के आगे दण्डवत् करना इन बातों से अलग है? हम संसार में इन सारी बातों से प्रेम करते हैं। हमारा प्रेम उनके और परमेश्वर के बीच में विभाजित है, और यही मूर्तिपूजा का सार है, किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति अनुराग रखना जो उसके योग्य नहीं है। और केवल एक ही परमेश्वर है जो अनुराग और आराधना के योग्य है। हम स्वयं की मूर्तिपूजा के प्रति अन्धे हैं।

और इसका परिणाम अनैतिकता है। बॉयस ने कहा, "हम पश्चिमी संसार में किए जाने वाले मानव जीवन के अनादर से चकित हो जाते हैं।" परन्तु हम क्या अपेक्षा रखते हैं जब हमारे जैसे देश खुलेआम परमेश्वर की ओर अपनी पीठ फेर दें? हम नैतिक मापदण्डों की गिरावट पर खेद प्रकट करते हैं, परन्तु उस समय हमारी क्या अपेक्षा है जब हमने अपनी आराधना सभाओं को परमेश्वर की बजाय स्वयं पर और हमारी नगण्य आवश्यकताओं पर केन्द्रित कर लिया है? परमेश्वर के बारे में हमारे विचार इस बात पर प्रभाव डालते हैं कि हम क्या हैं और क्या करते हैं। परन्तु हम इसे नहीं देखना चाहते हैं, इसलिए हम न केवल अपनी मूर्तिपूजा

के प्रति अन्धे हैं, परन्तु हम अनैतिकता के दोष को दूसरों पर मढ़ते हैं। हमारी संस्कृति में खेल का यही नाम है। आप अपने पाप के लिए उत्तरदायी नहीं हैं। किसी ने आपके साथ कुछ किया, आपके साथ कुछ हुआ। इसीलिए ऐसा हो रहा है। संस्कृति में समस्या कम से कम मेरे कारण नहीं है। यह दूसरे तत्वों के कारण है, और इस प्रक्रिया में, हम मुख्य बात से चूक जाते हैं।

बहनो और भाइयो, मैं हमारे जीवनों पर दूसरों के पापों के प्रभावों को किसी प्रकार कम करके नहीं आँकना चाहता, परन्तु यथार्थ यह है कि हमारे पापों के लिए हम उत्तरदायी हैं। यह कुछ ऐसा नहीं है जो हमसे बाहर है। यह हमारे अन्दर है, और हम भारत में भ्रूण हत्या पर सारे दिन अँगुली उठा सकते हैं, परन्तु यथार्थ यह है कि पिछले 40 से अधिक वर्षों से हमने लगभग 5 करोड़ बच्चों की गर्भ में हत्या कर दी है क्योंकि वे हमारे लिए सुविधाजनक नहीं थे। और हमने अश्लीलता के लाखों डॉलर के व्यवसाय को पोषित किया है, जिसमें इतने लोग शामिल हैं जो अनुमानतः कलीसिया के 50 प्रतिशत पुरूषों के बराबर हैं। हम मनुष्य की भ्रष्टता का उदाहरण हैं और हमें परमेश्वर के छुटकारे की आवश्यकता है।

और परमेश्वर की स्तुति हो कि हम न्यायियों या राजाओं या नबियों के बीच नहीं रहते हैं। परमेश्वर की स्तुति हो कि हम क्रूस की इस ओर इसे सुन रहे हैं, और हम जानते हैं कि यीशु ने हमारे जीवनों को परमेश्वर के दण्ड से बचा लिया है। इसके बारे में सोचें, मसीह ने मेरी और आपकी सारी गन्दगी को, सारी बुराई को, आपके बुरे विचारों को और मेरे बुरे विचारों को ले लिया है। उसने उन में से हर एक को लेकर उन्हें हमारी बजाय अपने पुत्र पर डाल दिया। यीशु ने हम में से प्रत्येक के पापों के दण्ड को अपने ऊपर ले लिया। उसने हमें परमेश्वर के न्याय से बचा लिया। और केवल यही नहीं, न केवल उसने हमें क्षमा किया है, बल्कि उसने हमें स्वतंत्र भी किया है। हमें अपने पापों में लौटने की आवश्यकता नहीं है, जैसा हम न्यायियों की पुस्तक में बार–बार देखते हैं। हम पाप से स्वतंत्र हैं, पाप के ऊपर जय में चलने के लिए स्वतंत्र हैं, और जिस से हमें छुड़ाया गया है उसमें वापस लौटने की आवश्यकता नहीं है।

फिर हमें क्या करना चाहिए? क्या हमें इस समाचार को सुनकर आराम से बैठना चाहिए, कि यीशु ने हमारे जीवनों को परमेश्वर के न्याय से बचाया है? क्या हम उस समाचार को सुनकर आराम से बैठे रहें जबकि लाखों–करोड़ों लोगों ने अभी तक इसे नहीं सुना है? बिल्कुल नहीं। हमारा उद्धार केवल इसलिए नहीं हुआ है कि हम इसे अपने अन्दर सोख लें। हमें इसलिए बचाया गया है कि हम अपने जीवन परमेश्वर करूणा के प्रचार में लगा दें। यही हम करते हैं। हम अपने आप को देते हैं, हम अपना जीवन देते हैं, हम अपना परिवार देते हैं, हम अपना समय देते हैं, हम अपना धन देते हैं। हम वह सब देते हैं जो हमारे पास है,

हमारे जीवन भी, पृथ्वी की छोर तक उसकी करूणा का प्रचार करते हैं। एकमात्र सच्चे परमेश्वर के लिए केवल यही प्रत्युत्तर है।

और अब हमारे लिए एक साथ मिलकर यह सोचने का आधार तैयार है कि परमेश्वर इस वर्ष भारत में हमें क्या करने की अगुवाई दे रहा है। पिछले सप्ताह मैं ने बताया था कि इस सप्ताह हम भारत में निर्णायक प्रयोग की विशेषताओं और उसके प्रभावों के बारे में विस्तार से बात करेंगे। आप जानते हैं कि एक ऐसे विश्वास के परिवार का अंग होना एक अतुल्य सौभाग्य है जो भारत जैसे देशों की भौतिक और आत्मिक आवश्यकताओं के अपने संसाधनों का त्याग कर रहा है। हम इसे कैसे कर रहे हैं? यह कैसा है? भारत के लोगों की सेवा करने में हम किस प्रकार शामिल हैं?

आइए हम पहले खोए हुओं की बात करते हैं। खोए हुओं की खातिर, हम वचन का प्रचार करते हैं। निर्णायक प्रयोग के द्वारा भारत में वचन का प्रचार कैसे कर रहे हैं? सबसे पहले, हमें समझना है कि भारत में लाखों–करोड़ों लोग हैं जिनके पास उनकी अपनी भाषा में परमेश्वर का वचन नहीं है। यह निरक्षरता के कारण और भी जटिल हो जाता है। जिन लोगों के पास उनकी अपनी भाषा में परमेश्वर का वचन है वे भी बाइबल को खोलकर उसे पढ़ नहीं सकते हैं।

तो इसे हम किसे कर रहे हैं? संसार के 18 प्रतिशत लोग निरक्षर हैं। उन 18 प्रतिशत के दो तिहाई लोग आठ देशों में रहते हैं। भारत उन में से एक है। भारत के 39 प्रतिशत लोग निरक्षर हैं। अन्य शब्दों में, वे पढ़ या लिख नहीं सकते हैं, और इसलिए आवश्यक है कि हम श्रव्य माध्यम द्वारा सुसमाचार उन तक पहुँचाएँ। और हमने भारत में एक भाषा समूह की पहचान की है, कारूक, जिन्हें सुसमाचार की आवश्यकता है। उन्हें परमेश्वर के वचन को सुनने की अत्यधिक आवश्यकता है, ताकि उन्हें जीवन में आशा प्राप्त हो सके। उस क्षेत्र में लगभग 20 लाख लोग हैं जहाँ हम अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे, और हम श्रव्य माध्यम द्वारा उन तक सुसमाचार पहुँचाने का प्रयास करेंगे, क्योंकि वे इसी प्रकार सीखते हैं। वे सुनने के द्वारा सीखते हैं और फिर वे उसे दोहराते हैं। और इसलिए हम उस भाषा को उन तक पहुँचाना चाहते हैं, और इसे संभव बनाने के लिए हम भारत में दो अलग–अलग समूहों के साथ भागीदारी करेंगे।

दो भागीदारियाँ जिनके साथ हम कार्य करने वाले हैं, एक, सीड कम्पनी, जो विक्लिफ द्वारा प्रायोजित है, और विक्लिफ ने पाया है कि परमेश्वर की वचन के अनुवाद को गति देने का सर्वोत्तम तरीका कहानियों के साथ शुरू करना है। और इसलिए वे एक टीम को भारत में भेजते हैं और वे वहाँ शान्ति के लोगों के साथ

कार्य करते हैं, और वे बाइबल की 20 से 30 कहानियों का अनुवाद करना शुरू करते हैं। और वे इस कार्य को करने के लिए टीम के साथ, स्थानीय लोगों के साथ कार्य करते हैं, और इसे करने के लिए उन लोगों को काम पर रखते हैं। और फिर वे इन कहानियों को लेकर गाँवों में जाते हैं और सुनने वाले, कहानी समूहों की शुरूआत करते हैं। और लोग पहली बार परमेश्वर के वचन को सुनते हैं, और जब ऐसा होता है तो लोगों में रूचि उत्पन्न होती है। और फिर वे इसे लेकर भाषा सीखने वाले लोगों के साथ मिलकर कार्य करते हैं, और वे लूका के सुसमाचार और नये नियम का अनुवाद करते हैं।

अब, विक्लिफ ने एक बात पाई है कि आप बाइबल का अनुवाद कर सकते हैं, और यदि आप इसे पढ़ नहीं सकते, तो इससे ज्यादा फायदा नहीं है। इसलिए उन्होंने विश्वास सुनने के द्वारा आता है कि साथ भागीदारी की, और भारत में विश्वास सुनने के द्वारा आता है वह दूसरी भागीदारी है जिसके साथ मिलकर हम कार्य करेंगे। वे लोग श्रव्य रिकॉर्डिंग को तैयार करते हैं जिसे उद्घोषणा कहते हैं।

वे इन उद्घोषणाओं को वे गाँवों में ले जाकर स्थापित करते हैं और वे वहाँ श्रोता समूहों को आरम्भ करते हैं। और लोग सुसमाचार को सुनते हैं, और मसीह के अनुयायी बनते हैं। वह बढ़कर कलीसिया बनती है और उद्घोषणाओं में दिए गए वचनों को वे बार–बार चेलेपन के लिए प्रयोग कर सकते हैं। और भारत में खोए हुए लोगों के लिए परमेश्वर के वचन की बड़ी आवश्यकता को हम इसी प्रकार पूरा करेंगे।

क्या यह उत्साहजनक नहीं है कि यहाँ देने के द्वारा, हम भारत में वचन के प्रचार में भागीदारी कर सकते हैं। और निर्धनों की खातिर? निर्धनों की खातिर, हमें वचन को दिखाने की आवश्यकता है। हमें सुसमाचार को दृश्य रूप में दिखाने की आवश्यकता है। इसे हम भारत में कैसे कर रहे हैं? उत्तरी भारत में लोगों को वचन दिखाने के लिए हमारे संसाधनों के साथ हम कैसे एक साथ सहभागिता कर रहे हैं?

हम कम्पैशन इन्टरनैशनल के साथ साझी हैं। भारत में 400 से अधिक कलीसियाओं के साथ हमारी सहभागिता है, जिनमें से कई शिशु रक्षा कार्यक्रम चला रही हैं। और हम उनमें से 21 के साथ शामिल हैं।

हमारे शिशु रक्षा कार्यक्रम का दर्शन है कि हम मृत्युदर को संबोधित करने या माताओं और शिशुओं को निर्धन क्षेत्रों में मृत्यु से बचाने में अगुवे बनें। हम इसे चार क्षेत्रों में करते हैं। सबसे पहले भौतिक क्षेत्र है। हमारे पास ऐसे कार्यक्रम हैं जो माताओं और शिशुओं की आवश्यकताओं की पहचान करते हैं और हम उन्हें

संबोधित करते हैं; टीकाकरण, लघु अभिलेख, शिक्षा और बच्चों को संभालने और उनके पोषण की जानकारी।

एक संज्ञानात्मक कार्यक्रम भी है, और यह माताओं की साक्षरता के लिए है। यह उन्हें सिखाने के लिए है, पुनः, शिशु के विकास की अवस्थाओं के बारे में। हमारे कार्यक्रम में आत्मिक तत्व भी है। हम जो कुछ करते हैं वह स्थानीय कलीसिया के स्तर पर होता है, और जो कुछ होता है वह पासबानों और कलीसिया के अगुवों की निगरानी में होता है। हम जानते हैं कि पिछले तीन महीनों में, 23 माताओं ने मसीह यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया, और वह तीसरा अवयव है।

चौथा अवयव सामाजिक–आर्थिक है। हमारे पास आय उत्पन्न करने वाले कार्यक्रम हैं जिन्हें हम माताओं को साथ करते हैं ताकि वे आय को कमाने के द्वारा अपने परिवारों के स्वास्थ्य और भलाई में योगदान कर सकें। परन्तु वे चार मुख्य क्षेत्र हैं जिनमें हम मुख्यतः कार्य कर रहे हैं।

यहीं पर हम देने के द्वारा निर्धनों, विशेषतः माताओं और बच्चों की सेवा करने के लिए स्थानीय कलीसियाओं के साथ सहभागिता कर रहे हैं। उत्तरी भारत की वास्तव में कठिन और विनाशकारी आवश्यकताओं में से एक और है स्वच्छ जल की उपलब्धता। 386,000 भारतीय बच्चों की जलजनित रोगों के कारण पाँच वर्ष से कम की आयु में मृत्यु हो जाती है।

आज भारत के गाँवों में लगभग 13 करोड़ लोग हैं जिनके लिए स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं है। और हम जिस प्रकार कार्य करते हैं वह बिल्कुल आसान है। यहाँ संयुक्त राज्य में, हम लोगों को जागरूक करते हैं, हम प्यासों और गरीबों के लिए वकालत करते हैं। हम जागरूकता फैलाते हैं और कोष एकत्रित करते हैं। प्राप्त कोषों में से हम 100 प्रतिशत चल रही परियोजनाओं के लिए दे देते हैं। और हम संचालन व्ययों के लिए उसमें से कुछ भी नहीं रखते हैं। यहाँ तक कि निर्णायक प्रयोग कोषों का भी 100 प्रतिशत चल रही परियोजनाओं के लिए जाता है।

और हम सहभागिताओं के द्वारा कार्य करते हैं। सहभागिता के बिना हम इसे नहीं कर सकते थे। इसलिए हमने जल विशेषज्ञों को सावधानी से चुना है, जो समुदायों में स्थानीय कलीसियाओं से जुड़े हैं। इन स्थानीय कलीसियाओं की या तो समुदाय में उपस्थिति है, वहाँ एक कलीसिया है, या वे उस समुदाय में प्रचार करती रही हैं और कलीसिया की स्थापना करना उनका लक्ष्य रहा है। इसलिए जब पानी आता है,

जहाँ पहले पानी नहीं था, तो यह बच्चों के स्वास्थ्य पर और समुदाय में पासबान या स्थानीय कलीसिया की स्वीकृति पर भी बड़ा प्रभाव डालता है।

अब हमने भारत में लगभग 100 कुओं के लिए सहायता दी है। इसका प्रभाव तुरन्त होता है, और हमारे लिए इसके बारे में सोचना कठिन है, क्योंकि हर सुबह जब हम उठते हैं, तो जहाँ भी हम जाते हैं हमारे पास पानी उपलब्ध रहता है। हमारे लिए यह आसान है, और यह उनके लिए नहीं है। हर सुबह माँ और बच्चे उठकर सबसे पहले यह सोचते हैं कि आज मुझे पानी कैसे मिलेगा। यही मुख्य चिन्ता है। और पानी की कमी के कारण, वे गन्दा, दूषित जल लाने के लिए हर दिन कई मील पैदल चलते हैं, और उस पानी से अक्सर उनके बच्चे बीमार हो जाते हैं, और वे उस पानी से मर भी सकते हैं।

और इसलिए प्रभाव तुरन्त होता है। जब स्वच्छ जल आता है, तो उसके साथ स्वच्छता और स्वास्थ्य के बारे में प्रशिक्षण दिया जाता है, और बच्चों के स्वास्थ्य में तुरन्त सुधार आया है, चर्म रोग दूर हो गए हैं क्योंकि अब वे स्वच्छ जल से स्नान करते हैं, और पानी की उपलब्धता के कारण अब वे हर दिन अधिक भोजन खा सकते हैं। यदि उनके नहाने—धोने और खाना पकाने और पीने के लिए केवल पाँच गैलन पानी ही उपलब्ध हो तो उनके भोजन की मात्रा भी सीमित हो जाती है।

इसका एक अच्छा उदाहरण एक गाँव है जहाँ मैं सितम्बर और फिर नवम्बर में गया था। सितम्बर में मैं कुछ मित्रों के साथ वहाँ था, और वहाँ बहुत ही निराशाजनक दृश्य था, बच्चों के चेहरों पर कोई मुस्कान नहीं थी, वे चर्म रोगों से पीड़ित थे। वे हमें वहाँ लेकर गए जहाँ बड़े खुले कुओं से वे बाल्टियों से पानी निकालते थे। एक कुँए में मेंढ़क भरे थे और दूसरा शैवाल से भरा था, और वहाँ से उन्हें पानी मिलता है।

और कुछ सप्ताहों में, स्थानीय कलीसिया के द्वारा स्वच्छ जल लायाा गया, और नवम्बर में मैं पुनः वहाँ गया और वह पूरी तरह बदल गया था। यह अद्भुत था। मुझे ऐसा लग रहा था कि यह कोई दूसरा गाँव था, लेकिन यह वही गाँव था। मैं ने पासबान का साक्षात्कार लिया और उन से बदलाव के बारे में पूछा, और उन्होंने कहा, "पानी आने से पहले, वे मुझे धमकी दिया करते थे और मुझ से कहते थे कि सुसमाचार का प्रचार करने के लिए इस गाँव में मत आना।" उन्होंने कहा, "परन्तु अब जबकि हमारे पास स्वच्छ जल है, वे मुझे प्यार से अंकल कहते हैं।" और इस कारण हमारे लिए, यह कुंजी है, स्वास्थ्य और निर्धनता में सुधार होते, और सुसमाचार के प्रभाव को देखना।

और इस प्रकार हमारा देना भारत में वचन का प्रचार करना और वचन को दिखाना है। और कलीसिया की खातिर? कलीसिया की खातिर, हमें वचन को सिखाना है। हम वचन को कैसे सिखा रहे हैं? उत्तरी भारत में कलीसिया की अवस्था क्या है? ऑपरेशन वर्ल्ड कहता है कि कमजोर चेलेपन और शिक्षा की कमी के कारण नाममात्र की मसीहियत और मिश्रण बढ़ रहा है। इसलिए प्रशिक्षण अत्यधिक आवश्यक है।

अब, हमें यह सोचना है कि हमारा प्राथमिक मिशन क्या है। हमारा प्राथमिक मिशन सारी जातियों के लोगों को चेला बनाने के द्वारा परमेश्वर की महिमा करना है। क्या आप जानते हैं कि भारत में अब भी 325 ऐसी जातियाँ हैं जिनमें एक भी ज्ञात मसीही नहीं है और उनका सुसमाचार से कोई वास्ता नहीं है? सुसमाचार से वंचित लोगों के बीच कलीसिया की स्थापना करने के लिए हमारी प्राथमिक भागीदारी इन्टरनैशनल मिशन बोर्ड के साथ है।

सबसे पहले, लोग अन्धकार में जी रहे हैं। उन्हें यीशु की ज्योति को देखने की आवश्यकता है। और दूसरा, उन्हें सुसमाचार के द्वारा बचाने की आवश्यकता है। ऐसा करने के लिए, हमें स्थानीय कलीसियाओं और अगुवों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है जो अन्धकार में जी रही जातियों के लोगों तक पहुँचें।

हम दो अलग–अलग तरीकों से लोगों को प्रशिक्षण दे रहे हैं। अगुवाई के लिए अगुवों को प्रशिक्षण देना और महान आज्ञा को पूरा करने के लिए स्थानीय मसीहियों को प्रशिक्षित करना। पाठ्यक्रम का नाम जीवन का वृक्ष है। जीवन का वृक्ष कलीसिया स्थापना का प्रशिक्षण है, और उस प्रशिक्षण के द्वारा, हम अगुवों को तैयार करने का प्रयास कर रहे हैं कि वे दूसरे अगुवों को सिखाएँ और तैयार करें। साथ ही, हम स्थानीय कलीसियाई सदस्यों को भी प्रशिक्षण दे रहे हैं कि वे खोई हुई आत्माओं और खोए हुए लोगों तक सुसमाचार को पहुँचाने की जिम्मेदारी को अपने ऊपर लें। हम उन्हें केवल श्रोता नहीं, बल्कि कार्यकर्ता बनने का प्रशिक्षण दे रहे हैं।

और दूसरा, हम उन्हें प्रशिक्षण दे रहे हैं कि वे केवल विश्वासी न बनें, बल्कि चेले बनें। हमारी अपेक्षा है कि कलीसियाओं के वर्तमान सदस्यों में से 100 प्रतिशत लोग यीशु के पीछे चलने में व्यस्त होंगे। उदाहरण के लिए, जीवन के वृक्ष का पहला स्तर है, "यदि तुम मेरे पीछे आओगे तो मैं तुम्हें मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊँगा।" जब हम उसके बारे में बात करते हैं, हम उस पद में से एक प्रश्न को पलट देते हैं। हम कहते हैं यदि आप यीशु के पीछे चल रहे हैं, तो इसका अर्थ है कि आप मछली पकड़ रहे हैं। यदि आप मछली नहीं पकड़ रहे हैं, तो क्या आप यीशु के पीछे चल रहे हैं? इसी कारण हम विद्यमान कलीसियाओं के लोगों

को प्रशिक्षण दे रहे हैं कि वे चेले बनें, विश्वासी नहीं, क्योंकि महान आज्ञा यह नहीं कहती है कि जाओ और विश्वासी बनाओ। यह कहती है जाओ और चेले बनाओ। इसलिए हम चेले बनाना चाहते हैं, न कि विश्वासी। हम उन्हें अधिकार देते हैं कि वे जाकर उसी रीति से सिखाना जारी रखें जैसा हमने 2 तिमुथियुस 2:2 से सीखा है। और वे वापस लौटते हैं और उसी रीति से सिखाना आरम्भ करते हैं।

पिछले चार वर्षों में, इस प्रशिक्षण के द्वारा 18,000 लोगों को बपतिस्मा दिया गया है, और चार वर्षों में 4,000 घरेलू कलीसियाओं की स्थापना की गई है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि स्थानीय लोग सुसमाचार से वंचित लोगों तक पहुँचने और नई घरेलू कलीसियाओं की स्थापना करने में हिस्सेदार हैं।

आप देख सकते हैं, कि महान आज्ञा में हमें दिए गए मिशन को पूरा करने में स्थानीय कलीसिया की मुख्य भूमिका है। हम ऐसी स्वस्थ कलीसियाओं को देखना चाहते हैं जो अपने समुदायों में यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रदर्शन कर रहे हैं और उसकी घोषणा कर रहे हैं और उन समुदायों को परिवर्तित होते देखना चाहते हैं।

हमारे देश में एक तरह का आत्मिक खालीपन है। कारण यह है कि लोग बहुत धार्मिक हैं, वे परमेश्वर की खोज में हैं और वे हर वस्तु में परमेश्वर की खोज कर रहे हैं। और इस कारण, यहाँ 33 करोड़ से भी अधिक देवी–देवता हैं। और लोग हर वस्तु की उपासना करते हैं। वे वृक्षों, पौधों और प्राणियों की उपासना करते हैं। जो कुछ वे देखते हैं, वे उसकी उपासना करने लगते हैं, और इसी प्रकार वे हर स्थान में ईश्वर की खोज करते रहे हैं। इस कारण लोगों के मनों में एक प्रकार की आत्मिक शून्यता, खालीपन है। यहाँ की आवश्यकता बहुत बड़ी है, और पृष्ठभूमि में हम समुदायों की सेवा करते रहे हैं, लोगों के घरों में जाते हैं, लोगों को तैयार करते हैं और उन लोगों को प्रशिक्षण देकर उन्हें सेवकाई में भेजते हैं ताकि वे कलीसियाओं की स्थापना करने के कार्य को जारी रखें। यहाँ मूलतः इसी प्रकार सेवकाई हो रही है।

हम विविध प्रकार से प्रशिक्षण देते हैं। जैसे, मैं भारत के उत्तरी क्षेत्र में जाता रहा हूँ। हमारा एक छोटा बाइबल स्कूल है जहाँ हम लोगों को तीन माह का प्रशिक्षण देते हैं और यह आवासीय है, और उसके पश्चात् वे समुदायों, गाँवों में जाते हैं, और कलीसियाओं की स्थापना करते हैं। वे वहाँ कार्य करते हैं और तीन माह के लिए वापस लौटते हैं और पुनः उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है और फिर समुदायों में भेज दिया जाता है। और यह प्रक्रिया इसी प्रकार चलती रहती है, और हमारी अपेक्षा है कि जब ये अगुवे तैयार होंगे, उस समय तक एक वर्ष के समय में वे कम से कम दो अगुवों को तैयार कर चुके होंगे। इसलिए उन्हें यह

कार्य दिया गया है, और उन्हें उन लोगों की पहचान करनी होती है जिन्हें उन्हें प्रशिक्षित करना है और वे उन अगुवों को अपने साथ लेते हैं।

प्रत्येक कलीसिया स्थापक को मूलतः सुसमाचार सुनाने की जिम्मेदारी दी गई है। हम उन्हें पाँच से सात गाँव देते हैं। जहाँ वे यात्रा कर सकते हैं। इस प्रकार के 30 नये कलीसिया स्थापक आए हैं, वे जाकर उन गाँवों में वृद्धि करेंगे। इस प्रकार वे लगभग 150 से 200 गाँवों में कार्य कर सकेंगे और प्रत्येक गाँव में लगभग 700 से 1,000 लोग हैं।

चूंकि कलीसिया उनकी सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा कर रही है, कलीसिया उनकी आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा कर रही है, इसलिए ग्रामीण सुसमाचार का प्रत्युत्तर दे रहे हैं और वे बड़ी संख्या में प्रभु में आ रहे हैं। ब्रूकहिल्स बिल्कुल सही समय पर सहभागिता के लिए आगे आई है, जब हमें अपने लोगों को अगुवाई और चेलेपन में आगे बढ़ाने की आवश्यकता थी, और स्त्रियों और युवाओं को उत्साहित करने की आवश्यकता थी और ब्रुकहिल्स से हमें बिल्कुल सही सहायता मिली है, और इस सहभागिता के लिए हम प्रभु के प्रति कृतज्ञ हैं। और आने वाले दिनों में, इस अगुवाई प्रशिक्षण में हम ग्रामीण पुरूषों और स्त्रियों को शामिल करेंगे। हम युवाओं और स्त्रियों को भी प्रशिक्षण देना जारी रखेंगे, और इसी प्रकार हम भारत के उत्तरी क्षेत्र में सम्पूर्ण समुदाय को प्रभावित करने का प्रयास करते रहे हैं।

इस प्रकार हम भारत के लोगों की सेवा कर रहे हैं। कलीसिया के बजट में त्यागपूर्वक देने के कारण, हम वचन को बाँटने, वचन को दिखाने और वचन को सिखाने में भागीदारी करने में सक्षम हुए हैं, और इस कारण संसार की सेवा, लोगों की सेवा विशेषतः उत्तरी भारत के लोगों की सेवा करने में सक्षम हुए हैं। परन्तु हम जानते हैं कि हमारा देना ही पर्याप्त नहीं है। हमें भी जाना है। हमें देना है और हमें जाना है।

सबसे पहली बात जो हमें करनी है वह है प्रार्थना। हमें प्रार्थना करनी है और परमेश्वर से पूछना है कि वह हमें दिखाए कि वह दूसरे सन्दर्भ में हमसे कहाँ सेवा करवाना चाहता है। दूसरा, अगुवों को प्रशिक्षण देना अत्यधिक महत्वपूर्ण है, और हम अगुवों के लिए प्रशिक्षण उपलब्ध करवाते हैं जो आपकी छोटी यात्राओं में अगुवाई करते हैं।

तीसरी बात वास्तव में तैयारी को देखना है, और तैयारी तीन प्रकार से की जाती है। हम प्रत्येक टीम के अगुवे से अपेक्षा रखते हैं कि वह टीम को आत्मिक रूप से तैयार करे और हम अपेक्षा रखते हैं कि वे टीम

को एक सांस्कृतिक सन्दर्भ में तैयार करें, और व्यवहारिक तन्त्र भी और यह सुनिश्चित करना कि आप वहाँ पहुँचें और घर पहुँचें। तीसरी बात एक रवैये के साथ जाना है, और यह जाने और यह देखने का रवैया है कि परमेश्वर ने आपके लिए क्या रखा है। बहुत बार हम जाते हैं, "हम क्या करेंगे?" या हम अपने एजेन्डा के साथ जाते हैं, और यदि यह हमारा एजेन्डा है, तो यह हमारे बारे में है, और यह हमारे भागीदारों के बारे में या जहाँ हम जा रहे हैं वहाँ परमेश्वर का कार्य करने के बारे में नहीं है, और बहुत बार इससे भलाई की बजाय हानि ही होती है। इसलिए हमें यह नहीं भूलना है कि हमारे जाने का मुख्य उद्देश्य मसीह की ज्योति बनना और मसीह के हाथ और पाँव बनना है। यह लचीला बनने के बारे में है, लचीला बनना और परमेश्वर पर भरोसा रखना कि वह हमें उस सन्दर्भ में अपनी इच्छानुसार प्रयोग करेगा ताकि हम उसके नाम में एक परिवर्तन ला सकें।

इस प्रकार हम संसार भर में संसार की सेवा कर रहे हैं। आज विशेषतः हम भारत के बारे में बात कर रहे हैं। इसी प्रकार हम वचन को दिखाते हैं, वचन को बाँटते हैं, वचन को सिखाते हैं, और इस प्रकार संसार की सेवा करते हैं। और हमने बात की कि इसे हम खोए हुओं की खातिर, निर्धनों की खातिर, कलीसिया की खातिर, करते हैं, परन्तु अन्तिम रूप से यह मसीह की खातिर है। हमने बात की कि हम कैसे दे सकते हैं और हमारे द्वारा दिए जाने वाले धन का किस प्रकार प्रयोग हो रहा है। हमने बात की कि हम कैसे जाएँ, परन्तु हमने यह बात नहीं की कि कैसे हम प्रार्थना भी कर सकते हैं। प्रार्थना एक ऐसी बात है जिसे हम किसी भी समय, किसी भी स्थान पर कर सकते हैं, इस समय भी कर सकते हैं। और मैं चाहता हूँ कि हम कुछ पल प्रार्थना करें, उन सहभागिताओं के लिए जिनके बारे में हमने बात की, उस कार्य के लिए जिसे परमेश्वर आपके द्वारा भारत में कर रहा है। अतः अगले कुछ क्षण हम प्रार्थना में व्यतीत करेंगे। आइए हम एक साथ मिलकर विश्वास के परिवार के रूप में प्रार्थना करें।

पिता, हमारे प्रति बड़े अनुग्रह और बड़ी करूणा के लिए हम आपकी स्तुति करते हैं। हम आपकी स्तुति करते हैं कि हमारा जन्म ऐसे सन्दर्भ में हुआ जहाँ हमने सुसमाचार को सुना है। हम जानते हैं कि हमारे जन्मस्थान के बारे हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। हम आपकी स्तुति करते हैं कि हमारा जन्म ऐसे सन्दर्भ में हुआ है जहाँ हमें पानी के बारे में चिन्ता नहीं करनी पड़ती है क्योंकि यह हमारे लिए उपलब्ध है। हम जानते हैं कि आपने हमें यह अनुग्रह दिया है और करूणा की है, इसलिए नहीं कि हम आराम से बैठकर इसे सोखते रहें, बल्कि इसलिए कि हम अपने जीवन आपके अनुग्रह और आपकी करूणा को पृथ्वी की छोर तक फैलाने में लगा दें।

इसलिए आज हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें उस उद्देश्य के लिए उपयोग करें। हम अंगीकार करते हैं, प्रभु परमेश्वर, कि केवल आप ही परमेश्वर हैं। केवल आप ही आराधना के योग्य हैं। उन करोड़ों देवी–देवताओं में से कोई भी महिमा और आदर और भक्ति के योग्य नहीं है। केवल आप ही योग्य हैं।

इसलिए, हम प्रार्थना करते हैं कि आप अपने महान नाम को फैलाने के लिए हमारा उपयोग करें। हमारी प्रार्थना है कि इस प्रक्रिया में, हे परमेश्वर, आप उन लोगों की सहायता करें जो भूखे हैं या प्यासे हैं, जो जीवित रहना और फलवन्त होना चाहते हैं। हमारी प्रार्थना है कि आप इसे इस प्रकार करें कि हर कदम में सुसमाचार उसके आगे और उसका केन्द्र हो। हमारी प्रार्थना है कि आप भारत की कलीसियाओं में हमारे भाइयों और बहनों की सेवा करने के लिए भी हमें प्रयोग करें।

हे परमेश्वर हमारी सहायता करें कि हम इस प्रकार उनकी सेवा करें जिससे उन्हें सामर्थ मिले, व दृढ़ हों, सक्षम हों, और सारी जातियों को लोगों को चेला बनाने के लिए तैयार हों। हम इन सुसमाचार से वंचित लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं, कि इस वर्ष इन गाँवों में वे पहली बार सुसमाचार के प्रचार को सुनें। हे परमेश्वर, हमारी प्रार्थना है कि लोग मसीह में आएँ। हमारी प्रार्थना है कि कारूक भाषा में यह कहा जाए कि यीशु ही प्रभु है, और हम प्रार्थना करते हैं, यह जानते हुए कि एक दिन आ रहा है जब कारूक भाषा में लोग आपके उद्धार के लिए आपकी स्तुति करेंगे। और हमें उसे यथार्थ में बदलने का हिस्सा बनने का सौभाग्य देने के लिए आपकी स्तुति हो, और हे परमेश्वर, हम प्रार्थना करते हैं, कि आप अपनी खातिर हर स्थान पर हमें खर्च करें। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।